विश्व न्याय मन्दिर

31 दिसम्बर 2005

विश्व के बहाईयों को

परमप्रिय मित्रगण,

जब पवित्र भूमि में महाद्वीपीय सलाहकारों का सम्मेलन अपने समापन की ओर है, हम प्रसन्नता, विजय और विश्वास की अपनी अनुभूति आप तक पहुँचाना चाहते हैं। इस सम्मेलन में वर्तमान पाँच वर्षीय योजना तथा इसके बाद के विश्वव्यापी उद्यम पर ध्यान केन्द्रित करते हुए परामर्श किये गये। धर्मभुजा अली मुहम्मद वर्क़ा ने कृतसंकल्प क्रियाशीलता की हृदयग्राही अपील के साथ सम्मेलन का उद्घाटन किया, जिससे सम्मेलन की कार्यवाहियों में एक अटल निश्चय की भावना जाग्रत हुई। मित्रों द्वारा किये गये प्रेरक कामों की कथा एक-के-बाद-एक सुनाई गई, जिससे दुनिया के लोगों की इच्छाओं और उनके प्रत्युत्तर की जानकारी मिली और इस आश्वासन की सुरभि भी चारों ओर फैली कि बहाउल्लाह का युगधर्म दुनिया के सभी भागों में पल्लवित-पुष्पित हो रहा है। लगातार सवाल उठते रहे कि विकास की इस प्रक्रिया को कैसे बनाये रखा जाये, प्रसार और सुगठन के बीच संतुलन किस प्रकार पाया जाये और जिस काम से पिछली आधी शताब्दी से बहाई समुदाय जुड़ा है उसे विस्तार किस प्रकार दिया जाये। इन सब के उत्तर उन अनुभवों से मिले जो सभी महाद्वीपों में प्राप्त हुए हैं। बाधाओं का लेखा-जोखा बढ़-चढ़ कर बोला, कुछ नई सीख मिली और जो रचनात्मक अन्तर्दृष्टि पाई गई उससे यह स्पष्ट हो गया कि प्रकाश का सैन्यसमूह नये क्षितिजों की ओर कूच करने के लिये तैयार है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि शीघ्र समाप्त होने वाली योजना ने प्रभुधर्म की नियति में क्रांति ला दी है। हम अगले पंद्रह सालों की ओर आशा भरी दृष्टि से निहार रहे हैं, जो रचनात्मक काल की पहली शताब्दी के अंतिम साल हैं। उत्कर्ष की इस घड़ी से बहाई विश्व अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा पिछले कुछ सालों के दौरान दिये गये मार्गदर्शन से प्रेरणा पायेगा और साथ ही भविष्य में किये जाने वाले प्रयासों के लिये दिशानिर्देश।

इस सम्मेलन को सम्बोधित 27 दिसम्बर का हमारा संदेश, जो राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को भेजा जा चुका है, अब तक हुए विकास से सम्बन्धित सीखों का सारांश प्रस्तुत करता है और अगली योजना की प्राथमिकताओं को निर्धारित करता है। सभी अनुयायियों और संस्थाओं द्वारा उस संदेश को ध्यान से पढ़ा जाना सलाहकारों के वापस अपने स्थानों पर जाने के बाद समुदाय के हर स्तर पर होने वाले परामर्शों के लिये आवश्यक होगा।

-विश्व न्याय मंदिर